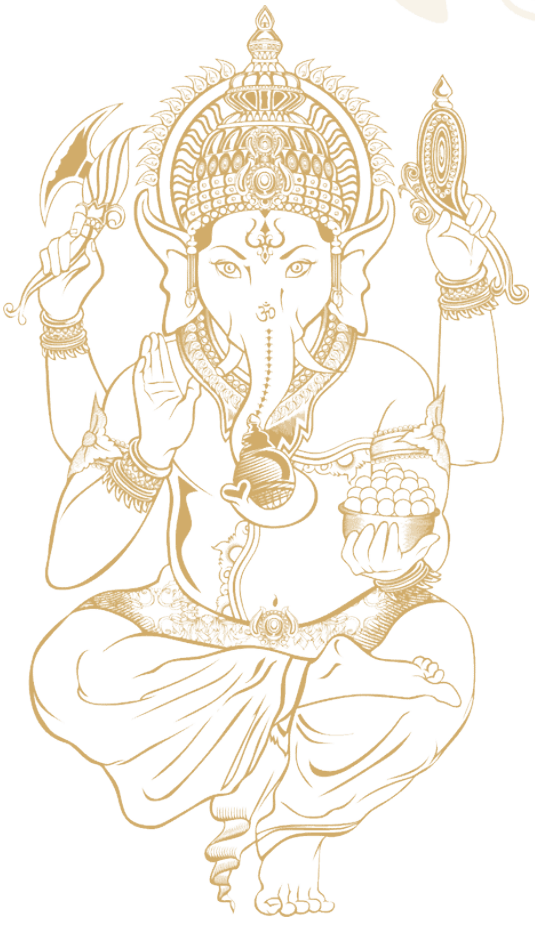

Jitendra Bhavya

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120367502

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
1-02/08/1999	जन्म तिथि	07/04/1999
रवि-सोमवार	दिन	बुधवार
घंटे 02:05:00	जन्म समय	23:16:00 घंटे
घटी 50:57:04	जन्म समय(घटी)	42:56:32 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:42:10	सूर्योदय	06:05:23
19:11:36	सूर्यास्त	18:41:59
23:50:53	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:36

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 11वर्ष 11मा 4दि	26:26:36	वृष	लग्न	वृश्चि	23:15:32	केतु 2वर्ष 8मा 6दि	
बुध	15:18:05	कर्क	सूर्य	मीन	23:37:04	सूर्य	
06/07/2011	08:17:45	मीन	चंद्र	धनु	08:13:05	13/12/2021	
06/07/2028	17:56:27	तुला	मंगल व	तुला	15:48:16	14/12/2027	
बुध 02/12/2013	05:39:41	कर्क व	बुध	कुंभ	28:16:50	सूर्य 02/04/2022	
केतु 29/11/2014	10:15:43	मेष	गुरु	मीन	18:47:56	चन्द्र 02/10/2022	
शुक्र 29/09/2017	11:07:49	सिंह व	शुक्र	वृष	00:29:03	मंगल 06/02/2023	
सूर्य 06/08/2018	22:38:23	मेष	शनि	मेष	10:24:41	राहु 01/01/2024	
चन्द्र 05/01/2020	19:05:55	कर्क	राहु व	कर्क	26:23:02	गुरु 19/10/2024	
मंगल 01/01/2021	19:05:55	मक	केतु व	मक	26:23:02	शनि 01/10/2025	
राहु 22/07/2023	21:12:14	मक व	हर्ष	मक	22:09:43	बुध 08/08/2026	
गुरु 27/10/2025	08:57:11	मक व	नेप	मक	10:17:29	केतु 14/12/2026	
शनि 06/07/2028	13:58:11	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	16:28:58	शुक्र 14/12/2027	

लग्न-चलित

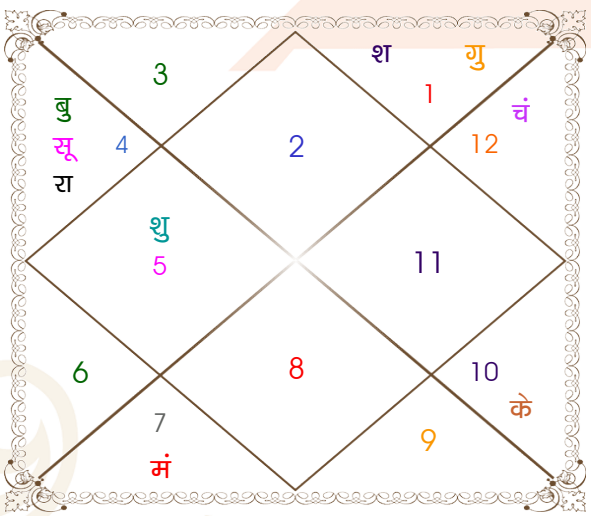

लग्न-चलित

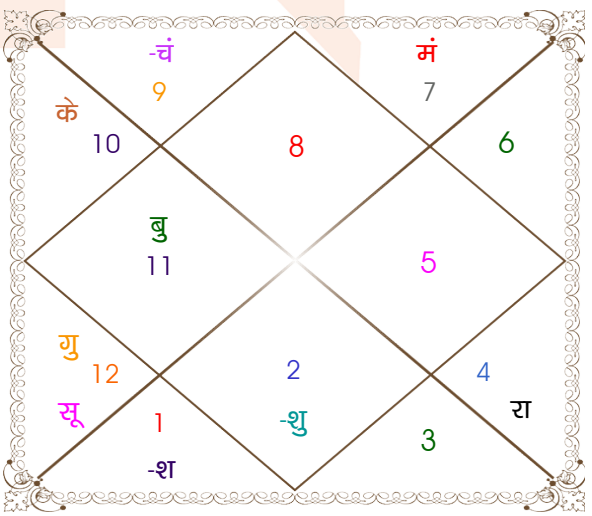

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गौ	श्वान	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	मीन	धनु	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

श्रपजमदकतं का वर्ग सर्प है तथा ठींअलं का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार श्रपजमदकतं और ठींअलं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

श्रपजमदकतं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

ठींअलं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल ठींअलं कि कुण्डली में द्वादश भाव में तुला राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि श्रपजमदकतं कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु श्रपजमदकतं कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

श्रपजमदकतं तथा ठींअलं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।